आँखें

माँ कहती है कि मेरी आँखें बहुत ख़ूबसूरत है। मेरी आँखों पे वह खूब सारी काजल लगाती हैI मेरी भाभी भी कहती है, "तुम्हारे गाल पे जो तिल है और जो तुम्हारी काजल भरी आँखें है,इससे तुम खूबसूरत लगते हो ।"

सच तो है कि मेरी आँखे बहुत खूबसूरत है, लेकिन क्या फायदा । रामुडु, मेरे भाभी के बेटे की तो छोटी, चमकती आँखें है, इमली के पत्तों जैसे। हम दोनों दस साल के हैं, लेकिन मैं उससे दस दिन बड़ी हूँ। इसके बावजूत वो मेरे से कई ज़्यादा अनुभवी है।

कुछ दिन पहले हमारे घर के सामने काफी शोर-शराबा हो रहा था। मैं बाहर चली गयी और भीड़ में शामिल हो गयी। फिर अचानक पता नहीं कहाँ से भैय्या आ गए और मुझे खींच कर घर ले गए।

फिर माँ चिल्लाई, "तुम लड़की हो। ऐसे कैसे बिना सोचे-समझे बाहर भाग गयी? मैं तो घर के अंदर ही चीख सुन कर घबरा गयी।"

सब मुझे इस बात पर डाँटते हैं कि मैं अक्सर कहती हूँ कि मुझे डर नहीं लगता। आपको पता नहीं कि मेरी भाभी के बुज़दिली पर भैय्या कितना हँसते हैं। भाभी को भैय्या अक्सर डराते हैं और जब वे डर जाती है तो बहुत खुश हो

जाते हैं। भाभी आँखें बंद कर लेती है और ऐसे दिखाती है कि जैसे उन्हें हर चीज़ से डर लगती हो। मैं कहती तो हूँ कि वे अपनी आँखें खोलले क्योंकि कुछ डरावना नहीं है। लेकिन वे आँखों को तो बंद ही रखती है। उनकी भी आँखें बड़ी है, लेकिन क्या फायदा? ऐसा लगता है कि उनको तो आँखें बंद रखना ही पसंद है।

जब माँ और भाभी बाहर जाते हैं, तो उनकी नज़रे ज़मीन पर ही रहती है।समझ में नहीं आता क्यों? ज़मीन पे ऐसा क्या है? अगर कुछ है भी उसको कोई कितना टाइम तक देखता ही रहेगा। वे दोनों तो आस-पास नज़र घुमाते ही नहीं हैं। माँ तो उल्टा मुझे डांटती रहती है, "इधर-उधर क्या देख रहे हो? ऑखें ज़मीन पर रखो और चलो।" यह कह कर सर पर मारती भी है।

ऐसे कैसे मैं चलूँ? गली में जब मैं चल रही हूँ तो आस-पास नहीं देखूँगी तो कैसे पता चलेगा कि क्या हो रहा है? अगर मैं बेवक़ूफ़ के बेवक़ूफ़ ही रहूँगी क्या वो रामुडु जो दिन-रात आवारपंथी करता है मुझे ध्यान देगा, मेरी बातें सुनेगा?

लेकिन रामुडु को भी बहुत सारी बातें नहीं पता। जैसे उसको यह नहीं पता कि औरतों का काम बहुत कम देखकर चल सकता है। माँ को तो यह बात अच्छी तरह से पता है। मुझे तो अपने आप को भी देखना मना है। जब आईने में देखती हूँ तो माँ चिल्लाती है, पूछती है कि मैं देख क्या रही हूँ? जैसे जैसे मैं बड़ी हो रही हूँ, मुझे आदमीयों को देखने से मना किया जा रहा है। अब तो रामुडु के साथ खेलती हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि एक-दो साल में यह

बंद हो जायेगा। अगर मैं उसको बाहर देखूँगी तो मुझे अन्दर जाना पड़ेगा। अगर रास्ते में कहीं मिल गया तो मुझे सर नीचे करना पड़ेगा और बस ज़रा-सा आँख उठाकर बात करना पड़ेगा। पड़ोस के पद्मक का ऐसे ही करते हैं। मैंने पुछा भी है कि वे ऐसे क्यों करते हैं? उनका कहना है कि देखने का सही तरीका यहीं है। मैंने कोशिश तो की है ऐसे देखने की, लेकिन होता नहीं है। पता नहीं कब सीखूंगी? यकीन न रामुडु तो ऐसे कभी नहीं कर पायेगा।

एक और बात है। सुना है कि लड़कियों के आँखों से आसानी से ऑंसुओं का टपकना भी बहुत ज़रूरी है। कुछ दिन पहले माँ हमारे पड़ोसन के बारे में कह रही थी, "देखो कितने पत्थरदिल की है। एक आँसू भी नहीं निकला उसका।" लगता है कि लड़कियों का आसानी से रोना अत्यंत ज़रूरी है। मुझे तो गुस्सा आसानी से आता है, रोना नहीं। जब बेवजह डाँट पड़ती है तो गुस्सा आता है। लेकिन भाभी तो आसानी से रो लेती है। उसी से भैय्या का गुस्सा ठण्डा हो जाता है।

"अच्छा, अच्छा ठीक है रोना बंद करो।" वे कहते तो है, लेकिन भाभी का रोना चलता ही रहता है। जब भैय्या और भाभी का झगड़ा होता है, तो भाभी ही रोते हैं, भैय्या नहीं। भैय्या एक बार भी नहीं रोये। मेरे माता-पिता में भी माँ ही रोती है। मुझे तो रोना बिलकुल पसंद नहीं। आँखें मेरी सूझ जाते है और काजल पूरे चेहरे पे फ़ैल जाती है। यह रोना दोना मेरे बस की बात नहीं है।

एक और बात सुनो। जब कोई लड़की कुछ अच्छा देखती है तो वह ख़ुशी नहीं दिखा सकती। कभी जब पिताजी आम की टोकरी ले आते हैं तो ख़ुशी से चिल्लाने और कूदने का मन करता है। लेकिन ऐसा करना तो मना है। जब आम थाली पर परोसा भी जाये तब भी ख़ुशी दिखाना मना है। आम को देखकर भी ख़ुशी नहीं दिखा सकते, तो क्या फायदा?

इसके अलावा, लड़कियों को गुस्सा दिखाना भी मना है। कुछ दिन पहले कल्याणी अक्का कॉलेज से लौट रही थी कि रास्ते में एक लड़का साइकिल से गिर गया। काफी चोट लगी थी। अक्का ने उसकी साइकिल उठाई, बिजली के खम्बे से खड़ा किया, लड़के को भी उठाया और उसको सीधा खड़ा किया। ये भी देखने की कोशिश की कि वह अपने पैर पर भार लगा सकता है या नहीं।

चाचा जी ने सारा कुछ देख लिया और उन्होंने पूरी बात अक्का के पिताजी को बता दिया। वैसे रिश्ते में अक्का के पिताजी मेरे भी चाचा हैं, लेकिन मैंने उनसे बात करना बंद कर दिया है। उन्हों ने अक्का की पिटाई जो की थी। उनका कहना था कि किसी अजनबी से अक्का ने गले में गला मिलाया था।

अक्का बार-बार कहती रही कि वह उस लड़के की मदद कर रही थी। लेकिन उनके पिताजी का कहना था,"तुम्हें यह 'समाज सेवा' करने की क्या ज़रुरत थी?”

अब जब अक्का ने उस लड़के को गिरते हुए देखा था तो कुछ करना ज़रूरी नहीं था ? वरना देखने का क्या फायदा? मैंने माँ से पुछा भी कि देखे को अनदेखा करना है तो देखने का क्या फायदा ? उनको तो मेरी बात समझ में ही नहीं आयी। बस मुझे चुप करा दिया।

आँखें तो बंद ही रहना चाहिए। ज़बान भी। कुछ दिन पहले मेरे भैय्या के ऑफिस से एक औरत घर आयी। कैसे वो हँस रही थी। और न माथे पे सिन्दूर, न आँखों में काजल। फिर भी बहुत सुन्दर थी। पूरा वक्त जब वो घर पे थी तो हँसती ही रही। माँ और भाभी दोनों ही चिड गए। उनका कहना था कि जिस औरत के माथे पे सिन्दूर और गर्दन में ज़ेवर न हो तो बतसूरत लगती है। "अच्छा? सच में वो आपको पसंद नहीं आयी?", मैंने कई बार उनसे पुछा। माँ का तो एक ही जवाब था: "मुझे तो वो बिलकुल अच्छी नहीं लगी। जिस चेहरे पे सिन्दूर न हो, मुझे तो उस चेहरे को देखने का मन भी नहीं करता।" अब मुझे इस बात का डर है की माँ के उम्र तक पहुँचते-पहुँचते, मेरी भी नज़र माँ जैसे न हो जाये। हे भगवान, वैसे बनगए तो कुछ न देख पाऊ।

"ऐसा क्यों होता है कि तुम्हारी ही आँखें सबकुछ देखती हैं?", माँ अक्सर पूछती है। वैसे भी जिन चीज़ों को वो देखती भी है, उनको भी वह ध्यान नहीं देती। क्या पता कि औरतों की आँखें ऐसे क्यों बन जाती हैं?

■ वोल्गा